

तंहिंजा सभि पिरवाणु, ग्यान ध्यान जप जोग जग,
जंहिं मिली साध-संगति सां, डिठो पंहिंजो पाणु,
दुख सुख लाभ अलाभ में, रहे साबूती साणु,
जाणे सभु कल्याणु, सदाई सामी चए.

आत्मज्ञानी मनुष्य के लक्षण बताते हुए महाकवि सामी कहते हैं, "जिस मनुष्य (साधक) ने साधु-संतों की संगत का लाभ प्राप्त किया है, उसका सारा ध्यान, ज्ञान, जाप, तपस्या, योग और यज्ञ आदि परमेश्वर ने स्वीकार कर लिए हैं। फलस्वरूप ऐसा मनुष्य (साधक) संसार में रहते हुए, सुख-दुख की हर अवस्था में, लाभ और हानि की हर स्थिति में स्थिर (दृढ़, अटल) रहता है। ऐसा मनुष्य अपने मन में दूसरों के प्रति सदा ही कल्याण/भलाई की भावना धारण किये हुए रहता है।"

अपने आत्मस्वरूप को पहचानने के लिए, आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए ज्ञान-मार्ग को अपना कर विवेक, वैराग्य, मोक्ष की आकांक्षा आदि साधनों का सहारा लेना चाहिए। भक्ति के विविध प्रकारों के द्वारा भी परमेश्वर के दर्शन हो सकते हैं। किन्तु सभी साधनाओं में परमेश्वर के प्रति अनन्य प्रेम होना नितांत आवश्यक है। सबको अपने अंतःकरण में परमात्मा को देखना चाहिए। संत कबीर के शब्दों में-

साहब हम में, साहब तुम में, जैसे प्राणा बीज में।

मत कर बंदा गुमान मन में, खोज देख ले तन में ॥

अब भला अपने मन-मंदिर में बैठे हुए परमात्मा को कैसे देखें? कैसे दर्शन करें परमात्मा का? उत्तर हैं 'स्वयं' को, अपने को पहचानना। अपने मन में स्थित उस परम तत्व का बोध करने के लिए सतगुरु या साधु-संतों की शरण में जाना। उनके वचनों के अनुसार आचरण करना। सतगुरु अंतर्ज्ञान प्रदान करने वाले हो हैं। मन के विकार दूर कर, अज्ञान का नाश कर ज्ञान का प्रकाश देने वाले सच्चे संतों के सानिध्य से यह लाभ प्राप्त होता है। कबीर साहब के शब्दों में,

कबीर संगत साधु की, नित प्रति कीजे जाय।

दुरमति दूर बहावसी, देई सुमति बताय ॥

वस्तुतः सच्चे साधु-संतों की संगत प्राप्त होना भाग्य का लक्षण है। संत-समागम मानो सभी साधनाओं का सम्राट है। इसलिए अपना जीवन सफल बनाने के लिए सत्संग भी जरूरी है। सामी साहब भी यही कहते हैं। जप, तप, ध्यान आदि के साथ-साथ संतों की संगत या सहवास करना भी लाभदायक एवं कल्याणकारी है।